शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (811-817) April - June 2019

अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयो में कार्यरत अध्यापको की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अंजलि गुप्ता
एसो0 प्रोफे0,
आई0टी0ई0, कादराबाद, मोदीनगर,
गाजियाबाद
Email: dranju1612@gmail.com

सारांश

अध्यापक शिक्षा की महत्वपूर्ण कडी है। छात्रों को आदर्श नागरिक एवम् राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुरूप तैयार करने में अध्यापक का महत्वपूर्ण सहयोग होता है। अध्यापकों को छात्रों की बढ़ती हुई समस्याओं को ध्यान में रखकर उनको शिक्षित करना होता है। यही कारण है कि अध्यापन के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य से जोडकर इसे विशेष महत्व दिया गया है। क्योकि अध्यापक ही भावी नागरिको के चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यो का निर्धारक और अनुशासन का स्तंभ होता है।

प्रस्तावना

आज के बढ़ते हुए भौतिकतावादी युग से अध्यापक भी अछूता नही है हर व्यक्ति सुविधाभोगी हो गया है, अध्यापक भी इसी समाज की एक ईकाई है। जिस प्रकार समाज के अन्य व्यक्ति अपने दायित्वों एवं कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन होते जा रहे है। उनकी तुलना में अध्यापक की कार्य के प्रति उदासीनता इस अनुपात में बहुत कम है। इसलिए यह समाज के अन्य व्यक्तियों से सम्मानित एवं उच्च माने जाते है। समाज मे शैक्षणिक जागृति के कारण आज विद्यालय में छात्रों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है जिससे प्रत्येक कक्षा को कई वर्गो में विभाजित करना पडता है। छात्र संख्या की वृद्धि के कारण विभिन्न प्रदत्तियों एवं विभिन्न स्तरो के बालको को सामान्य माप द्वारा एक सूत्र में बांधकर अध्यापन करना एक असाधारण कार्य है। अध्यापक को इस कार्य के लिए विशेष कुशलता एवं विशेष पद्धति का अनुसरण करना पडता है जिसके लिए अध्यापक से विशेष श्रम अपेक्षित है।

इतना ही नही विभागीय एवं प्रशासनीय आदेशो एवं निर्देशों के कारण अनेक पाठ्येत्तर कार्य करने पडते हैं। विभागीय विभागों के कार्य प्रयोगशाला में प्रयोगो का प्रर्दशन, अभ्यास, निबन्ध, उत्तर पुस्तिकाओं की जांच, आन्तरिक परीक्षा संचालन मूल्यांकन एवं क्रीडात्मक गतिविधियों को भी सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार शैक्षाणिक, सह शैक्षाणिक, अतिरिक्त शैक्षाणिक विभागीय एवं प्रशासकीय कार्यो के भार के अलावा पारिवारिक परिस्थितियों के संघर्ष

एवं सामाजिक दायित्वों मे कार्यरत् अध्यापक अनेक कर्तव्यों व कार्यभार से दबता जा रहा है। जिससे उसकी कार्य सन्तुष्टि प्रभावित होती है।

अध्यापक अध्यापन कार्य करते हुए जब आर्थिक विभिन्नता देखता है तो उसकी कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव परिलक्षित होता है। उक्त बोझिलता का उसकी कार्यक्षमता एवं कार्य की उपयुक्तता पर प्रभाव अवष्य सम्भावी है। प्रतिक्रिया यह होती है कि विभिन्न कार्यो का सन्तुलन बिगड़ जाता है एवं कार्यो की क्षमता में हास एवं प्रगति में मन्दता आ जाती है। इन परिस्थितियों का प्रभाव बालको के भविष्य के निर्माण मे व्यवधान उपस्थित करता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया जाये।

समस्या कथन

अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयो में कार्यरत अध्यापको की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता

अध्यापन के कार्य क्षेत्र में कार्य सन्तुष्टि अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य संपादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य सन्तुश्टि केवल वैयक्तिक स्तर तक ही सीमित होती है क्योकि इसकी व्याख्या हम सामूहिक रूप से नही कर सकते।क्योकि कार्य सन्तुश्टि किसी अध्यापक मे अंतर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। जिसे एक अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय के जीवन काल में बनाए रखने का प्रयास करता है। विद्यालयों की विभिन्नता और शिक्षकों के वेतनमान में भिन्नताएँ इन अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करती है।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य में अनुदानित एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की कार्य दशाओं के प्रति कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापकों की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको का मनौवैज्ञानिक आधार पर कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
5. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की आर्थिक वेतन भत्ते के आधार पर कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

6. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको का समुदाय के आधार पर कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

1. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की कार्य दशाओं के प्रति कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापकों की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की मनौवैज्ञानिक आधार पर कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की आर्थिक वेतन भत्ते के आधार पर कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

6. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापको की समुदाय के आधार पर कार्य सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य में आँकडो के संकलन हेतु प्रतिदर्श सर्वेक्षण पद्वति का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत अनुदानित और गैर–अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत् अध्यापकों का चयन किया गया है।

न्यादर्श विधि

प्रस्तुत शोध में अनुदानित व गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत् 50–50 अध्यापकों कोन्यादर्श चुना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोध के लिए समस्या में सम्बन्धित उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए शोधकर्ती ने डा0 अमर सिंह व डा0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित अध्यापक कार्य सन्तुष्टि मापनी (जे0एस0एस0) का प्रयोग किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधार्थी ने प्रदत्तों का कुशलता पूर्वक विश्लेषण करने के लिए अकंन की विभिन्न तालिकाओं से प्राप्त आँकड़ो का विश्लेषण मध्यमान, प्रमापविचलन व टी परीक्षण द्वारा किया।

आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1
अनुदानितएवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	30.20	4.69	5.04	4.3	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	35.24	6.86			

तालिका 1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमषः 30.2 व 35.24 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का **ज** मान 4.3 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान से अधिक है। अतः षोध परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य सन्तुश्टि में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकार किया जाता है।अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों मेंअपनेकार्य के प्रतिसन्तुश्टिगैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की तुलना मे अधिक है।

तालिका 2
अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य दशाओं के प्रति कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण।

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	29.64	3.62	1.6	1.88	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक नही है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	28.04	4.85			

तालिका 2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमष : 29.64 व 28.04 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध यापकों का **ज** मान 1.88 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। अतः षोध ा परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य दषाओं के प्रति कार्य सन्तुश्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'' को स्वीकार किया जाता है।अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकोंएवं गैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की कार्य दषाओं के प्रति कार्य सन्तुश्टि समानहै।

तालिका 3
अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	145.20	14.50	2.81	0.88	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक नही है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	145.80	17.31			

तलिका 3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमश 145.20 व 145.80 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का **ज** मान 0.88 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। अतः शोध परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'' को स्वीकार किया जाता है। अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि समान है।

तालिका 4
अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की मनौवैज्ञानिक आधार पर कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषलण।

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	39.8	5.99	2.08	1.33	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक नही है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	37.72	9.24			

तालिका 4 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 39.8 व 37.72 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का **ज** मान 1.33 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। अतः शोध परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की मनौवैज्ञानिक आधार के प्रति कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'' को स्वीकार किया जाता है।अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की मनौवैज्ञानिक आधार पर कार्य सन्तुष्टि समानहै।

तालिका 5
अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की आर्थिक वेतन भत्ते के आधारपरकार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण।

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	19.92	4.56	3.08	3.14	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	16.84	5.21			

तालिका 5 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 19.92 व 16.84 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का **ज** मान 3.14 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान से अधिक है। अतः शोध परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरतअध्यापकों की आर्थिक वेतन भत्ते के आधार पर कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकार किया जाता है। अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों में आर्थिक वेतन भत्ते के आधार पर कार्य सन्तुष्टि गैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की तुलना मे अधिक है।

तालिका 6
अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की समुदाय के आधारपर कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण।

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणित विचलन (S.D)	मध्यमान का अंतर	टी मान (क्रान्तिक मान)	सार्थकता का स्तर
अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	25.72	4.55	1.72	1.93	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक नही है।
गैर अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापक	50	27.44	4.38			

तालिका 6 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 27.72 व 27.44 है। महाविद्यालय मे कार्यरत अध्यापकों का **ज** मान 1.93 प्राप्त हुआ जो सारणी 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। अतः शोध परिकल्पना ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की समुदाय के आधार पर कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'' को स्वीकार किया जाता है।अतः अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकोंएवं गैर–अनुदानित महाविद्यालय के अध्यापकों की समुदाय के आधार पर कार्य सन्तुष्टि समान है।

प्राप्त निष्कर्ष

इस शोध कार्य में सभी जानकारी व परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए जो निष्कर्ष प्राप्त

हुए है वे इस प्रकार से है–

1. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयो मे कार्यरत अध्यापको की कार्य सन्तुष्टि मे सार्थक अन्तर है।

2. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य दशाओं के प्रति कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य चिन्तन के प्रति कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।

4. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की मनोवैज्ञानिक आधार पर कार्य सन्तुश्टि में सार्थकअन्तर नही है।

5. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की आर्थिक वेतन भत्ते के आधार पर कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।

6. अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों मे कार्यरत अध्यापकों की समुदाय के आधार पर कार्य सन्तुष्टि मे सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक निहितार्थ–

अच्छे शैक्षिक वातावरण में शिक्षा का योगदान अधिक होता है इसलिए अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्य तारत्मयता होना परम आवश्यक है वे शिक्षक ही उत्तम कोटि की श्रेणी में आ सकते है, जिनकी अभिवृत्ति तो शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक हो, साथ ही साथ कार्य सन्तुष्टि का स्तर भी उच्च कोटि का हो।

वर्तमान समय में अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है इसलिए आवश्यकता है ऐसे शिक्षकों को तैयार करना जो प्रशिक्षित होने के साथ–साथ शैक्षिक और सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन भी कर सकें। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कार्य सन्तुष्टि के कारकः वेतन, भुगतान प्रणाली, रोजगार की सुरक्षा आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अध्यापकों को मनौवैज्ञानिक परीक्षणो के समाधान से परामर्श दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे शिक्षा की प्रक्रिया मे बाधा न उत्पन्न हो।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 कपिल एच0 के0 1986, *सांख्यकी के मूल तत्व,* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

2 गुप्ता एस0पी0 2000, *आधुनिक मापन एवं मूल्याकंन,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

3 गुप्ता एस0पी0 2003, *सांख्यकी विधियां,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

4 पाठक, पी0डी0. एवं त्यागी, जी0एस0डी0 (2007). *शिक्षा सामान्य सिद्धान्त,* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

5 सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप. (2007). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त.* मेरठः विनय रखेजा।